# प्रेरणा (उत्प्रेरणा) का आधार भगवद्गीता

*डॉ. अनुजा शर्मा

अंग्रेजी में ''मिटिगेशन'' तथा ''मोटिवेटिंग'' शब्द का प्रयोग किया जाता है और हिंदी भाषा में हम दोनों ही अर्थो में इसे 'अभिप्रेरण या अभिप्रेरणा' ही कहते हैं अभिप्रेरणा शब्द का संज्ञा तथा क्रिया या कार्य दोनों अर्थों में प्रयोग किया जाता है। प्रबंध शास्त्र में भी इसका दोनों ही अर्थों में प्रयोग किया जाता है यह अभीप्रेरणा आवश्यकता कारण या अवधारणा या भावना है जो किसी व्यक्ति को कोई कार्य करने या नहीं करने हेतु प्रेरित करती है। गीता प्रेस गोरखपुर के संस्थापक श्री जयदयाल गोयन्दका जी ने गीता के 18 अध्याय के श्लोक नंबर (68–69)

**''य इमं परमं गुछं.....प्रियतरो भुवि।**

से प्रेरणा पाकर गीता प्रेस की स्थापना की जो अब तक धार्मिक साहित्य के प्रकाशन का विश्व का सबसे बड़ा संस्थान है जो अब तक 3 करोड़ से ज्यादा पुस्तकें छाप चुका है तथा यह एकमात्र ऐसा प्रकाशन केंद्र है जिसे तीर्थ स्थान का दर्जा हासिल है।

अंतरिक्ष में सबसे अधिक समय बिताने वाली भारतीय मूल की सबसे पहली महिला सुनीता विलियम्स (2006–07) में अंतरिक्ष के सफर में अपने साथ भगवद्गीता की एक प्रति ले गई थी जिससे वह प्रेरणा पाती रही।

- विश्व विख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन भी प्रतिदिन श्री भगवद्गीता का अध्ययन किया करते थे।
- प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ शिव गौतम के अनुसार गीता ने जो उपदेश दिए गए हैं वह डिप्रेशन की पहली साइकोथेरेपी है। वास्तव में गीता को डिप्रेशन से बाहर आने का ग्रंथ कहा जा सकता है इसे सबसे 'महत्वपूर्ण बिजनेस' बुक भी कहा जा सकता है जिसमें हर चीज का विश्लेषण किया गया है जयपुर में संपन्न मनोचिकित्सकों के त्रि दिवसीय चतुर्थ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विश्व भर के लगभग 4000 मनोचिकित्सकों ने ध्वनिमत से यह स्वीकार किया है कि गीता मनोचिकित्सा का मॉडल ग्रंथ है तथा श्री कृष्ण निपुर्ण मनोचिकित्सक है या गीता की साम्प्रतिक आवश्यकता का एक सुंदर उदाहरण हैं।

(D.M.R.C) दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन के प्रमुख रहे श्री धरण के अनुसार में गीता रोज पड़ता हूँ। मानव समाज की ज्वलंत समस्याओं का निराकरण करने की प्रेरणा भगवद्गीता से ही मिलती है। पृथ्वी पर उत्पन्न प्रत्येक प्राणी को श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ने की आवश्यकता है जो मानवों को ज्ञान के साथ जोड़ती है। मानव जाति से प्राणी भिन्न मात्र को उसके शब्द सुनने से ही मुक्ति मिल जाती है पाप नष्ट हो जाते हैं तथा उत्तम जन्म की प्राप्ति होती है नेत्रवान लोगों को जिस प्रकार प्रकाश की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार पृथ्वी पर उत्पन्न प्रत्येक प्राणी को

भगवद्गीता की आवश्यकता होती है तथा गीता प्रत्येक प्राणी की जीवन समस्याओं के परिष्कार में सहयोगी है क्योंकि इसी के द्वारा व्यक्ति समस्याओं को समझ पाने मैं सक्षम हो पाता है।

जैसे –

**मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्ण सुख दुःखदा।**

**आगमापायिनोडनित्यां स्तांस्ति तिक्ष भारत।**

गीता के उपदेशों में नेतृत्व क्षमता लक्ष्य पर एकाग्रता कार्यकुशलता निर्णय क्षमता, कर्म के प्रति निष्ठा, आशावादिता सर्वधर्म समानता तथा कुशल नेता बनने की कला सीखने की प्रेरणा मिलती है।

कर्त्तव्यपरायणता के लिए हमें कृष्ण जी के उस उपदेश का पालन करना होगा जो उन्होंने गीता के दूसरे अध्याय के प्रारंभ में ही दिया है वे कहते हैं

**"क्षुद्रं हृदयदौर्बल्य त्यक्तवोत्तिष्ठ परन्तप"**

**(गीता 2/3)**

(हे परंतप हृदय की तुच्छ दुर्बलता को त्याग कर युद्ध के लिए खड़ा हो जा।)

सकारात्मक सोच के प्रेरणा भी हमें भगवद् गीता से ही मिलती है। 'निष्काम कर्म योग' से व्यक्ति में सकारात्मक सोच का विकास होगा। गीता के दूसरे अध्याय में ही कृष्ण आसक्ति को छोड़कर और कर्म की सिद्धि हो या असिद्धि दोनों को समान ही मानकर योगस्थ होकर कर्म करने और समता की वृद्धि को ही कर्म योग कहते हैं।

**"योगस्थः कुरू कर्माणि संग व्यक्त्वा धनंजय।**

**सिद्धयसिद्धयोः समो भूत्वा समत्वं योग उच्चते।।**

अन्थत्र भी योग कर्मसु कौशलम् कहा गया है।

इस्कान के राष्ट्रीय कम्युनिकेशन निर्देशन और इस्कान दिल्ली के उपाध्यक्ष बृजेंद्र नंदन दास का मानना है कि गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से जो उपदेश दिए थे उनके सूत्रों से आज के मैनेजमेंट के मंत्र को जोड़ा जा सकता है और अलग–अलग तरह से इसका अर्थ निकाला जा सकता है दास के मुताबिक गीता में वर्णित श्लोक–

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' में कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि कर्म किया जा और फल की चिंता मत कर उसी तरह आज के समय में सभी कॉरपोरेट संस्थानों में भी मेहनत और कर्म की बात की जाती है। कॉर्पोरेट संस्थानों में प्रबंधन चाहता है कि कर्म सही दिशा में ही हो तो परिणाम भी बेहतर होगा आज के समय में अनेक संस्थान गीता के श्लोक को अपना ध्येय सूत्र मान कर चलते हैं।

कॉरपोरेट मैनेजमेंट गीता से प्रेरित है विशेषज्ञ कहते हैं कि वर्तमान समय में कंपनियों के प्रबंधन जिन मैनेजमेंट मंत्रों को अपनी कार्य योजना में इस्तेमाल करते रहते हैं उसका वर्णन गीता के उपदेशों में भी है।

पंजाब वि.वि. में प्रोफेसर संजय वडवलकर का मानना है कि गीता का संदेश है कि पूरा जीवन एक कला है और

इसके अनुरूप जीवन में नए–नए उतार–चढ़ाव आते रहते हैं उनका मानना है कि यही बात आज के समय और प्रबंधन पर लागू होती है कि कंपनियों में भी काम करना एक कला है और मैनेजमेंट के गुरों में गीता ज्ञान छिपा है।

एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में सीनियर मैनेजर वरुण कहते हैं कि आज कंपनियाँ कम से कम संसाधनों का अधिक दोहन कर अधिक उत्पादकता चाहती है। इसी तरह महाभारत में भी पांडवों ने हजारों सैनिकों को छोड़कर केवल कृष्ण को चुना क्योंकि अर्जुन ने उनके भीतर महाभारत का महासारथी देखा था।

कर्तव्य और कर्म को संबंधों से ऊपर उठकर मानने वाले श्री कृष्ण गीता में निष्काम कर्म की शिक्षा देते हैं निष्काम एवं अनासक्ति कर्म ही कर्म योग है अर्जुन के माध्यम से कृष्ण ने सभी को कर्मयोग का पाठ पढ़ाया। कर्म कैसे करना चाहिए इसका विवेचन गीता में किया गया है

**यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः**

**समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निवध्यते।।**

इसी तरह आज के समय में सभी कॉरपोरेट संस्थानों में भी मेहनत और कर्म की बात की जाती है। प्रसिद्ध उद्यमी हर्ष गोयंका के अनुसार सबसे बेहतरीन सलाह मुझे गीता से मिली। इसी वजह से मैं किसी भी काम को आत्मविश्वास से करता हूं।

गीता के कर्म योग से मानसिक तनाव व दबाव जो कि मनुष्य में फल की इच्छा व कारण में फल ना मिलने से उत्पन्न निराशा से उत्पन्न हुआ है उसे दूर किया जा सकता है।

**''सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।**

**त्तो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमावाप्स्यसि।।**

यदि कर्मचारी या अधिकारी मंमबुद्धि की भावना से कर्म करे तो निश्चित ही लाभ या हानि से परे जाकर निष्ठा पूर्वक कर्म करेंगे, जो उनके मनोबल को शुद्ध करने में सहायक होगा।

मोटिवेशन के सबसे बड़े गुरु स्वयं श्रीकृष्ण रहे। कृष्ण ने हर परिस्थिति को हंसकर जिया। परिस्थिति कभी कृष्ण पर हावी नहीं हो पाई कृष्ण सदा स्वयं के नियंत्रण में रहे। कभी स्वयं को लाचार नहीं माना जीवन को स्वाभाविक ढंग से खेल खेल में जी कर दिखा गए।

कोई भी सरकारी अथवा गैर सरकारी संस्थान अपने दौर में ऐसी मुसीबतों से जरूर गुजरता है ऐसी स्थिति में उस संस्थान कानेतृत्व उसका ढांचा उसके मूल्य और नैतिकता जैसी अहम गुण होते हैं जो उसके लंबे समय तक टिके रहने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कृष्णा अपने चरित्र के जरिए ढेरों जगह किसी भी संस्थान के पुनरूद्वार और उसमें भरपूर जोश भरने के कई रास्ते बताते हैं। असल में जीवन महज एक अध्याय से कहीं ज्यादा है, जिस में खुशी, हर्षोल्लास, दुख, विलाप अलग–अलग रूप में मौजूद रहते हैं।

श्री कृष्णा प्रबंधन की पाठशाला है उनके जीवन के अनेक पहलू हैं जिनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। प्रबंधन से काम हो, संयम धर्म के रास्ते पर कर्म में होगे तो नतीजे निश्चित तौर पर सार्थक होंगे।

इस प्रकार श्री भगवद्गीता में श्री कृष्ण का चरित्र काफी कुछ कहता है जो प्रबंधन के छात्रों के लिए कालजई पाठ

है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है यहाँ पंचायत स्तर पर लाखों नेता मौजूद हैं। प्रबंधन, रणनीति मूल्य और नेतृत्व पर कृष्ण के जीवन से एक या ज्यादा प्रेरणा लेकर देश के विकास के लक्ष्यों को साधते हुए एक कुशल और बेहतर लोकतंत्र का निर्माण किया जा सकता है।

***सह–आचार्य**
**संस्कृत विभाग,**
**राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान)**

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. राधाकृष्णन् – भगवद्गीता
2. विनोद मल्होत्रा – गीता में मैनेजमेंट सूत्र
3. Morariji Desai (English) - A view of the Gita
4. Swami Sheel Prabhupad (English) – Bhagwat Gita as it is
5. आचार्य विनावा भावे – Facts on the Gita
6. M.D. Pradkar – Studies in the Gita
7. R.B. Lal (English) – The Gita is the light Modern Science
8. Sri Aurobindo – Essay on Gita
9. Bal Gangadhar Tilak (English) – Srimad Bhagwat Gita Rahsya